स्तनग्रंथियां एवं थनों के लक्षण

- स्तनग्रंथियां एवं थनों पर छाले पड़ना। दूध दुहते समय दर्द होना।
- दूध ग्रंथियों में रह जाने के कारण थनेला (मैस्टाइटिस) रोग का होना।

थानों के लक्षण

उपचार

- खुरपका मुंहपका रोग एक विषाणु (वाइरस) जनित रोग है अतः इनका कोई विशिष्ट उपचार नहीं होता। इस रोग के लक्षणों की तीव्रता एवं विनाशक क्षमता को कम करने तथा अवसरवादी जीवाणुओं (बैक्टीरिया) के संक्रमण को रोकने के लिए औषधियां दी जाती हैं।
- अवसरवादी जीवाणुओं के संक्रमण को रोकने के लिए जीवाणुरोधी (एंटीबायोटिक्स) औषधियों का प्रयोग।
- मुख, खुर एवं थानों के छाले साफ करने के लिए एंटीसेप्टिक पदार्थों द्वारा उपरोक्त अंगों की धुलाई।
- धोने के बाद छालों या अल्सर पर 2 प्रतिशत बोरो ग्लिसरीन का लेप करना।
- ज्वर की तीव्रता कम करने के लिए तापमानरोधी औषधियों (एंटीपायेटिक) का प्रयोग।
- इस समय पशु को मुलायम आहार (दलिया, हरा चारा आदि) दें।

रोकथाम

- पशुओं का उचित समय पर वर्ष में दो बार टीकाकरण। पहला टीका मई–जून में एवं दूसरा टीका नवंबर–दिसंबर में लगवाएं।
- स्वास्थ्य पशु को रोगी पशु के संपर्क से बचाएं।
- रोगग्रसित पशु के दूध का सेवन ना करें।
- रोग क्षेत्र में पशु के आवागम पर पूर्ण प्रतिबंध लगाएं।

नोट :

अधिक जानकरी के लिए अपने निकटतम पशु चिकित्सालय पर संपर्क करें

संकलनकर्ता :

डॉ० राजेश अग्रवाल एवं डॉ० राजीव सिंह

खुरपका-मुंहपका रोग (मोरवर)

पशु औषधि विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय
शेर-ए-कश्मीर कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
रणवीर सिंह पुरा, जम्मू - 181102

खुरपका–मुंहपका रोग

खुरपका–मुंहपका रोग तीव्र गति से फेलने वाला एक विषाणु जनित रोग है, जो प्रायः जुगाली करने वाले पशुओं में पाया जाता है। इस रोग में पशु को तीव्र ज्वार होता है तथा मुंह, खुर, स्तनग्रंथियों एवं थानों पर छाले पड़ जाते हैं

कारक

- यह रोग अति सूक्ष्म आकार के विषाणु (वायरस) द्वारा होता है।
- भारतवर्ष में यह रोग ओ,ए,सी, एवं एशिया–1 प्रकार के विषाणु द्वारा होता है।

संवेदनशील पशु

- पालतू पशु : गाय, भैंस, भेड़, बकरी, याक, सूअर एवं ऊँट।
- जंगली पशु : हिरण, नीलगाय, बारहसिंगा, जिराफ, मिथुन एवं जंगली सूअर।

प्रसार/संक्रमण

- रोगी पशुओं के सीधे संपर्क द्वारा।
- रोगी पशुओं की लार, स्त्राव, उत्सर्गी पदार्थों के संपर्क में आने से दूषित हुए आहार, चारा एवं दाना – पानी द्वारा।
- पशुओं की उच्च वास में छोड़ दिए गए विषाणु द्वारा।

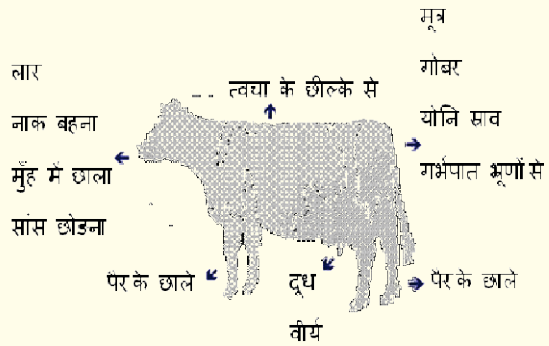

लक्षण

- संक्रमण के 2 से 8 दिन के भीतर ही पशु का सुस्त हो जाना।
- पशु का जुगाली करना एवं चारा खाना बंद कर देना।
- पशु को तीव्र बुखार 104–106 डिग्री फारेनहाइट का होना।
- पशु के मुंह, खुर एवं स्तनग्रंथियों पर छालों का पड़ना।

मुख के लक्षण

- मुख में पीड़ादायक सूजन।
- जीभ, मसूड़ों पर छाले।
- मुख से चपचपाहट की विशिष्ट आवाज़ का आना।
- लार का लंबाई में रस्सी की तरह बाहर गिरना व अधिक मात्रा में स्त्राव।
- 24 घंटों के भीतर छालों का फुटकर लाल धब्बे जैसे घाव (अल्सर) बना देना जिनका एक सप्ताह के भीतर भर जाना।
- मुंह में घाव के कारण पशु का ठीक से चारा ना खा पाना।

मुख के लक्षण

खुर के लक्षण

- पशु के खुरों के बीच छाले बनकर फूटना।
- पशु का ठीक प्रकार से खड़ा न हो पाना एवं लंगड़ाकर चलना।
- खुरों के बीच उचित देखभाल के अभाव में कीड़ों का पड़ जाना।

खुर के लक्षण